'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक १३१ | वाराणसी, शनिवार, १४ नवम्बर, १९५९ | पच्चीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

मीरासाहिबाँ (जम्मू-कश्मीर) ८-६-'५९

जिन्हीं नाम धी आइयाँ गये मसक्कत घाल

आज कुल दुनिया में कशमकश, असमाधान, असन्तोष और डर छाया हुआ है। इस हालत में प्रेम से मसले हल हो सकें, ऐसी राह की तलाश करनी है। भारत ऐसी राह दिखायेगा और दिखा भी सकता है। इस देश का दस हजार साल का इतिहास है। यहाँ हमें ऋषि, मुनि, बली, साधु, संतों ने और आखिर महात्मा गांधी ने प्रेम की तालीम दी है। इसलिए हम यह काम कर सकते हैं, प्रेम से मसले हल कर सकते हैं।

प्रेम से मसले हल हो सकते हैं

हम आठ साल से घूम रहे हैं और आपसे कहना चाहते हैं कि कश्मीर के मसले भी प्रेम से हल हो सकते हैं। दिल के साथ दिल जुड़ सकते हैं। कई कारणों से यह होना बहुत आसान है और कई कारणों से कठिन भी है। आसान इसलिए है कि धर्म से, प्रेम से रहें, यह चीज हमारे खून में भरी है। इसलिए हिंदुस्तान में यह मुमकीन है। मुश्किल इसलिए है कि यहाँ अनेक धर्म हैं। अनेक धर्मों का होना गलत नहीं है। लेकिन उनमें आपस में ऊँच, नीच का खयाल, भाव न होना चाहिए, जो आज है और दिनों दिन उसमें इजाफा हो रहा है। इसका कारण सियासी पार्टियाँ हैं। यह अमुक पार्टी, यह अमुक—ऐसे झगड़े गाँवों को तोड़ रहे हैं। सब-के-सब जनता के हित का दावा करते हुए एक-दूसरे को गालियाँ देते हैं। एक-दूसरे को हीन, जलील दिखाते हैं। परिणाम यह होता है कि लोग अलग-अलग पक्षों में बँट जाते हैं।

जम्मू-कश्मीर में हमारी यात्रा आरंभ हुई है। लेकिन अभी से हम देख रहे हैं कि कुछ लोग एक पार्टी की निंदा करते हैं और कुछ लोग दूसरी पार्टी की। हम किसीकी निंदा को अहमियत नहीं देंगे। हम तो कहते हैं कि हमारे पास दूसरे की निंदा मत करो। अपने दोष बताओ। आप उसकी निंदा करते हैं, वह आपकी निंदा करता है और जनता दोनों की निंदा करती है। इसी वजह से प्रेम का काम बन नहीं पाता है, मुश्किल हो जाता है।

मुश्किल आसाँ हो यह सारा

अब मुश्किल और आसान जैसा भी है, हम यह काम लेकर समझाने आये हैं। हम चाहते हैं, गाँव-गाँव परिवार बने। गाँव में चाहे अनेक जातियाँ हों, धर्म हों या सम्प्रदाय हों, पर हम सब इन्सान हैं, एक ही घर के वाशिंदे हैं, ऐसा संकल्प गाँववाले करें। भगवान ने हमें जो चीज दी है, उसे बाँट देना चाहिए। वह कौन सी चीज है? वह है जमीन! उसे हम सबके लिए खोल दें। जैसे हवा, पानी सबके लिए है, वैसे ही जमीन भी सबके लिए है। इसलिए सबको जमीन मिलनी चाहिए। सामने बैठे हुए बच्चे भी यह बोलने लगे हैं—"हवा, पानी जैसी जमीन भी सबकी।" बच्चों के मुख से, जबान से भगवान बोलते हैं। ये बच्चे जो सामने खड़े हैं, उन्होंने यह कबूल कर लिया है। 'पवन गुरु पानी पिता, माता धरती मात।' पवन याने हवा सबकी गुरु है। वह बोल रही है कि मैं सबपर समान प्यार करती हूँ। वैसे तुम भी सबपर समान प्यार करो। कोई प्यासा सामने आया तो हम उसे पानी पिलायेंगे। हम उसे यह नहीं कहेंगे कि हमारे घर का पानी है। क्योंकि हम जानते हैं कि 'पवन गुरु, पानी पिता।' वैसे ही यह धरती, यह जमीन हमारी माता है।

इतनी बात बहनें पकड़ लें। जीना है तो जमीन पर, मरना है तो भी जमीन पर। घर जमीन पर है, गाय घास खाती है तो भी जमीन पर। सारा आधार धरती पर है। वह हमें धारण करती है। सबपर पूरा प्रेम बरसाती है। उसपर सबका समान हक है। इसलिए गाँव की जमीन सबकी बनानी चाहिए।

घर की सेवा तो सभी करते हैं। पर अब गाँव की सेवा के लिए भाई-बहनों को सामने आना चाहिए। उन्हें कहना चाहिए कि हम तनख्वाह न लेकर भी सेवा का काम करेंगे। गाँव की गन्दगी साफ करेंगे, बीमारों की सेवा करेंगे। अगर गाँव में झगड़ा हो जाय तो बीच में पड़कर शान्ति कायम करेंगे। शान्ति कायम रखने के लिए मार खानी पड़े, मौके पर मर मिटना पड़े तो भी राजी रहेंगे। ध्यान रहे—"जिन्ही नाम धी आइयाँ, गये मसक्कत घाल" जिन्होंने भगवान का नाम लिया, उनकी मेहनत-मसक्कत पूरी हुई, वे सफल हो गये। उनके मुख उज्ज्वल हो गये।

• • •

प्रार्थना-प्रवचन

साम्बा (जम्मू) ४-६-'५९

इन्सानियत को बचानेवाली चार पगडंडियाँ

हिंदुस्तान के मुख्तलिफ सूबों की यात्रा करके मैं जम्मू-कश्मीर में पहुँचा हूँ। अभी लोगों को यह समझना बाकी है कि यह यात्रा मैं पैदल क्यों कर रहा हूँ ? लोगों के दिलों तक पहुँचने के लिए पैदल-यात्रा के सिवा भारत में दूसरा अन्य कोई साधन हो सकता है, ऐसा अभी तक तो मालूम नहीं हुआ। इसीलिए अभी कांग्रेस ने भी आदेश दिया है कि सभी कांग्रेसवालों को एक-एक हप्ता क्यों न हो, पर पदयात्रा करनी चाहिए। कांग्रेस ने यह आदेश इसलिए नहीं दिया कि उसके नेता कोई दकियानूसी खयाल रखते हैं या हवाईजहाज में नहीं उड़ते। वे दकियानूसी खयालों के नहीं हैं, लेकिन अब हवाईजहाज में उड़ने से उनके पंख थक गये हैं। उनको मालूम हो गया है कि सिर्फ हवा में उड़ने से काम नहीं बनता। काम करने के लिए तो जरा जमीन पर चलना पड़ता है। खैर ! वह तो उनकी यात्रा हुई। मैं अपने ढंग की यात्रा कर रहा हूँ। पर हमारी यह पैदल-यात्रा एक बुनियादी विश्वास के आधार पर चल रही है। लोगों के दिलों तक पहुँचने के लिए, पूरा प्रेम देने और पूरा प्रेम पाने के लिए हम पैदल चल रहे हैं। इस तरह का काम करने के लिए हम जरा नीचे उतरकर सतह पर लगे हैं। उसीपर रहें तो लोगों के दिलों तक पहुँच भी सकते हैं।

जोश का उपयोग करें

आठ साल की पदयात्रा के बाद हम यहाँ आये हैं। इस राज्य में हमें १४ दिन हुए। हमें पहले यह खयाल नहीं था कि यहाँ के लोग भूदान और ग्रामदान की बात सुनने को राजी होंगे या नहीं ? शांतिसेना वगैरह बातों की चर्चा यहाँ जरूरी होगी या नहीं ? हमने इस राज्य में प्रवेश करते समय एलान किया था कि हम यहाँ देखेंगे, सुनेंगे और प्यार करेंगे। वही हमारा कार्यक्रम १४ दिन चला। अब धीरे-धीरे यहाँके मसले क्या हैं, यहाँ क्या हो रहा है, इसका थोड़ा सा अन्दाजा हो रहा है। अभी हम जम्मू और कश्मीर के बारे में खास नये विचार नहीं बनायेंगे। हमें जब पूरा दर्शन होगा, तब खयाल होगा तो होगा। लेकिन अभी तो हम समाज की हालत देख रहे हैं। हमने यहाँ जो हालत देखी, वह भारत के दूसरे समाज से बहुत जुदा नहीं है। इन्सानियत पर वहाँ जो श्रद्धा देखी, वही यहाँ भी देखी—अपेक्षा से ज्यादा देखी। कृष्णाजी (महेता) कहती हैं कि यहाँ तो सैलाब आ रहा है ! शांतिसेना में लोग नाम दे रहे हैं, जमीन का दान दे रहे हैं। भारत और कश्मीर में यह ताकत है। भाप के समान वह ताकत ऐसे ही आसमान में चली जायगी तो इसका उपयोग नहीं होगा। उसे रोकने का इन्तजाम करना चाहिए। भाप को 'बॉयलर' में रोकते हैं, तब इंजिन चलता है। किन्तु यदि उसे वैसे ही छोड़ दें तो कोई ताकत पैदा नहीं होती। चाय की केटली में भाप देखकर उस वैज्ञानिक को भाप की ताकत का पता चला था। यह ताकत सबको मुहैया कैसे हो, इसकी तरकीब ढूँढ़ो। वह हाथ में आयी, तब पता चला। वैसे ही समाज में उत्साह, जोश होता है। जब उमड़ता है, तब वह जाया भी जा सकता है और उसका उपयोग भी हो सकता है। यहाँ जो जोश दीखता है, वह कम से कम दूसरे सूबों से कम नहीं है। यहाँ शांति का काम करने के लिए २०० लोगों ने नाम दिये हैं और कहा है कि 'हम गाँव की सेवा करेंगे। मौके पर शांति का काम करेंगे और उसके लिए कुछ जो भुगतना पड़ेगा, हिंमत से भुगतेंगे।' इस तरह यहाँ २०० लोग नाम देते हैं तो यह बड़ी बात है। इससे आशा बनती है।

इसके अलावा यहाँ सीलिंग बना है, फिर भी लोग दान दे रहे हैं। आज भी दान मिला। यहाँ मामला ठंडा नहीं है। इस जगह जो ऐसी बातें हो रही हैं, वह यहाँकी हवा में एक गुण है, ताकत है, इसीसे हो रही हैं। इस तरह हम देख रहे हैं कि हमारा जो उद्देश्य है, वह आपके सहयोग से सफल हो सकता है।

इधर प्रेम है, उधर डर !

आप जानते हैं कि इस वक्त दुनिया में कशमकश चल रही है, सभी जगह डर छाया हुआ है। दुनिया के किसी हिस्से में अशांति होती है तो वह कुछ दुनिया में फैल जाती है। इसी अशांति को मिटाने के लिए बड़े-बड़े पुरुषों में, जो देश के नेता कहलाते हैं, रोजमर्रा बातें होती हैं। उसकी खबर पेपरों में भी आती है। उससे कभी आशा पैदा होती है तो कभी निराशा। आईक और माईक रोज चर्चा करते हैं। उनकी बातचीत की रिपोर्ट लिखी जाती है। उसका तो ढेर हो गया होगा, लेकिन कोई मसला हल नहीं हुआ है। सर्वत्र अशांति, असमाधान फैला हुआ है।

दूसरी बाजू घर-घर में माँ, बाप, बेटे आपस में प्यार की बात करते हैं। हर घर में—फिर वह रूस हो चाहे अमेरिका, पाकिस्तान हो चाहे हिंदुस्तान-प्रेम किया जाता है। इधर घर में प्रेम है और उधर दुनिया में डर ! इन्सान को इन्सान से ही हद दर्जे का डर है। इधर घर में प्रेम की बात है और बाहर खौफ छाया है। यह नरसिंह अवतार है। एक बाजू शेर का रूप है और दूसरी बाजू इन्सान। दोनों मिलकर एक रूप हैं। इस हालत से बचाने के लिए जो बातें सूझती हैं, वे आपके सामने रख रहा हूँ। मुकामी मैदान में, अपनी जगह पर हम एक-दूसरे का सहयोग करें, मिल-जुलकर काम करें, एक-दूसरे को मदद करें। किसीको दुःख हो तो उसमें हिस्सा लें। किसीको भी अकेले दुःख न भोगने दें।

सहकार का रास्ता

आज यहाँकी कातनेवाली बहनें और बुननेवाले भाई हमसे मिलने आये थे। यहाँ सूत का कपड़ा बनता है। लेकिन वह बुनवाकर, दिल्ली, मद्रास और बम्बई में बेचा जाता है। अगर वहाँ न बेचा जायगा तो एक दिन आपको यह आदेश मिलेगा कि कृपा करके अपनी पैदावार कम करें। फिर खादी का ढेर देखकर कातनेवालों और बुनकरों के दिल में घबड़ाहट होगी। इस तरह छोटे-छोटे गाँव के लोग जब बिल्ली बनकर रहेंगे तो इन बहनों को रोजी कैसे मिलेगी ? अगर गाँववाले यह सोचते हों कि ये बहनें हमारे गाँव की हैं। इसलिए इनको खाने को मिलना ही चाहिए, तो इनका बुना हुआ कपड़ा पहनें और यह शपथ लें कि हम बाहर का कपड़ा नहीं पहनेंगे और नहीं खरीदेंगे। इसका नाम है सहकार, सहयोग। गाँव के बुनकर का कपड़ा चमार पहनें, तेली का तेल बुनकर खरीदें। इस तरह मिल-जुलकर काम करना, एक-दूसरे के धंधे को मदद करना और प्रेम बरसाना—यह काम गाँववालों को करना चाहिए।

www.vinoba.in

प्रेम को घर में कैद बनाकर न रखें। गाँव के सब लोगों के लिए अपना प्रेम खोल दें। ऐसा सहयोग न करेंगे तो यह खादी और ग्रामोद्योग टिकनेवाले नहीं हैं। सरकार इसे लाख मदद करे, फिर भी खादी अपनी मौत मर जायगी। आठ साल से मैं चिल्ला रहा हूँ। ३० साल तक मैंने खादी का तथा दूसरे रचनात्मक काम किये हैं और उनका चिन्तन भी किया है। इसलिए जब से भूदान शुरू हुआ, तबसे मैं चिल्ला रहा हूँ कि यह व्यापारी खादी नहीं टिकेगी। इसके लिए तो ग्राम-संकल्प होना चाहिए कि हम गाँव की खादी गाँव में इस्तेमाल करेंगे। ऐसे निश्चय के साथ जो खादी बनेगी, वही असली खादी होगी और वही टिकेगी और वही खादी मुबारक होगी। मेरी बात अब इन बुद्धुओं की समझ में आ रही है। ये लोग जल्दी नहीं समझते, इससे मुझे गुस्सा नहीं आता, क्योंकि ये लोग दुर्जन नहीं हैं।

रुके पानी को गाँव की लोकगंगा में मिलाइये

हमें याद है। हम साबरमती आश्रम में थे। वहाँ आश्रम के नजदीक ही नदी बहती है। एक दफा नदी के मुख्य बहाव से एक छोटा सा पानी का हिस्सा अलग पड़ गया। बीच में बहुत सारी रेत थी। वह छोटा सा हिस्सा था। फिर भी उसमें काफी पानी था। वह पानी धीरे-धीरे सूखने लगा। उसमें मछलियाँ थीं। मैंने कहा : "ये मूरख मछलियाँ जानती नहीं हैं कि पानी सूख रहा है।" आखिर मुझे दया आयी। मैंने फावड़ा लेकर बीच की रेत हटायी और उस स्रोत को मुख्य स्रोत के साथ जोड़ दिया। वे मछलियाँ एकदम खुश हो उछलने लगीं। मैं वह दृश्य भूल नहीं सका। खैर, इन बुद्धुओं को भी रास्ता मिलेगा। एक दफा एक भिखारी को कुबेर मिला। कुबेर ने उसे कुछ माँगने को कहा तो उसने कहा : "मेरे पास तरकारी नहीं है।" कुबेर के पास करोड़ों रुपये थे। पर भिखारी की जबान से तरकारी की ही माँग निकली। फिर उसे एक महीने के लिए रोज की एक सेर तरकारी मिली। भिखारी खुश हो गया। ऐसे ही ये खादीवाले सरकारी मदद पाकर खुश हो गये हैं। सरकार ने खादी पर एक रुपये में तीन आना छूट दे दी है। लेकिन वह बहता हुआ चश्मा नहीं है। यह मदद तो रुके हुए पानी जैसी है। गाँव की यह जो लोक-गंगा है, वह बह रही है। उसके साथ इस पानी को जोड़ना होगा। जैसे गांधीजी ने कहा था : 'गाँव का कपड़ा गाँव में ही इस्तेमाल होना चाहिए,' तभी खादी टिकेगी। मैं यह खादी के लिए नहीं बोल रहा हूँ, मैं यह मिसाल दे रहा हूँ कि मुकामी क्षेत्र में सहयोग होना चाहिए।

तीन बातें

१. यह मेरा जम्मू, यह मेरा कश्मीर, यह मेरा भारत ऐसा नहीं होना चाहिए। कुल दुनिया मेरी है, यही सोचकर व्यापक नजरिया होना चाहिए।

२. अपनी इंद्रियों पर काबू रखना चाहिए। गुस्सा, काम-वासना, अहंकार, मत्सर—यह सब मन से हटाने की तालीम मनुष्य को मिलनी चाहिए। तालीम में यह होना चाहिए। चित्त-शुद्धि कैसे हो, इसका चिन्तन होना चाहिए।

३. गाँव की सेवा के लिए हम अपनी बुद्धि, शक्ति और समय लगायें। ऐसा कहनेवाले शान्तिसैनिकों को आगे आना चाहिए कि 'हम अपने गाँव की सफाई करेंगे, सेवा करेंगे, बीमारों की, दुःखियों की सेवा करेंगे और कभी मौका आया, कशमकश हुई तो बीच में पड़कर बिना गुस्से के शान्ति से जान कुरबान करने के लिए भी तैयार होंगे।'

प्रार्थना-प्रवचन

रणवीर सिंगपुरा (जम्मू) ७-६-'५९

सेवा जीवन है और अकर्मण्यता मृत्यु

आज यहाँ हमसे मिलने के लिए कुछ शरणार्थी आये थे। वे पंजाब से भागकर आये हैं। उन्हें यहाँ रहते १० साल हो गये हैं। उन्होंने हमें अपने दुःख सुनाये। हम हर जगह कुछ सुनते हैं, कुछ देखते हैं और फिर जितना हो सके, उतना दिल जमाने का काम करते हैं। हमने यहाँ भी बातें सुनी हैं। उनमें से जितना हो सकेगा, उतना करेंगे।

गांधीजी के जाने के बाद, १२ साल पहले हम शरणार्थियों के काम के लिए पंजाब, बंगाल, बंबई आदि कई जगहों में घूमे। शरणार्थी के घर नहीं थे, कैम्प थे। उनके दुःख कई तरह के थे। वे दुःख और कठिनायाँ हम सुनते थे और उनको मदद देते थे। दुःख सुनने से ही मनुष्य को हमदर्दी महसूस होती है। हम ज्यादा तो कर नहीं सके, लेकिन हमदर्दी रखते थे। इसलिए उनको बड़ी खुशी होती थी कि यह शख्स हमारे लिए हमदर्दी रखता है। यही कारण है कि आज भी वे याद करते हैं।

हम कहना यह चाहते हैं कि ये सुख और दुःख आते हैं, जाते हैं, जैसे रात और दिन आते है, जाते हैं। दुनिया में हम आये हैं तो कुछ न कुछ दुःख सहन करना ही होगा। राम, सीता, द्रौपदी, सावित्री वगैरह की जिंदगी में भी दुःख आया था। लेकिन वह सारा उन्होंने सहन किया। हमें उनसे सबक सीखना चाहिए। एक बात और है। मैंने एक-से-एक बढ़कर सुखी लोग और दुःखी लोग भी देखे हैं। बड़े लोग, लखपती भी दुःखी होते हैं। क्योंकि उनके पास करोड़ रुपये नहीं होते। हजार रुपयेवाला भी सुखी हो सकता है, अगर वह नीचेवाले की तरफ देखे यानी जिनके पास हजार रुपये से भी कम हैं, ऐसे लोगों की तरफ देखे और लखपती भी दुःखी हो सकता है, अगर वह ऊपर देखे। हम ऊपर देखें या नीचे? यह सवाल हम सबके लिए है। हम ऊपर देखेंगे तो दुःखी बनेंगे और मत्सर करेंगे। नीचे देखेंगे तो हम सोचेंगे कि भगवान ने जिन्हें हमसे भी कम दिया है, उन्हें मदद करना हमारा फर्ज है। हम भी गरीब को मदद दें। इस तरह हमदर्दी हो तो कुछ न कुछ देने की प्रेरणा भगवान हमें देगा ही।

आज अपना दुःख सुनानेवाले भाइयों से मैंने कहा कि आप दुःखी हो तो इस दुःख को मिटाने के लिए यह निश्चय करो कि हर रोज रात में सोने के पहले हमें घर के बाहर के बच्चों की या पड़ोसी की कुछ-न-कुछ सेवा करनी है। इस तरह तय करो तो बहुत कुछ पाओगे। मेरा पड़ोसी बीमार था। दो दिन से उसका

क्या संन्यासी संप्रदाय में रह सकता है ?

[यात्रा में एक जैन साधक के इस प्रश्न पर कि 'क्या संन्यासी सम्प्रदाय में रह सकता है ?', पू० बाबा ने कहा :]

सांप्रदायिक बंधन तोड़े बगैर संन्यास संभव ही नहीं है। बंधनमुक्ति के बिना आजादी संभव नहीं है और आजादी के बिना धर्म का आरम्भ ही नहीं होता। संन्यास तो अन्तिम चीज है। जहाँ आजादी के बिना धर्म का आरंभ नहीं होता है, वहाँ संन्यास कैसे संभव है।

जैन कहता है कि सूर्य दीख रहा है तो मैं खाना खाऊँगा और सूर्य नहीं दीख रहा है तो खाना नहीं खाऊँगा। अब खाने का सूर्य के साथ क्या सम्बन्ध है ? खाने का तो भूख के साथ सम्बन्ध है। सूर्य दिखाई देता हो और भूख न हो तो भी खाना गलत चीज है। सूर्य न हो और भूख है तो खाना चाहिए। भूख लगे तो खाना चाहिए, भूख से ज्यादा नहीं, बल्कि कुछ कम ही खाना चाहिए और स्वाद के लिए नहीं, बल्कि शरीर को यंत्र समझकर, देने की दृष्टि से खाना चाहिए। यह है खाने का शास्त्र। संन्यासी अगर सूर्य हो और भूख न हो तो भी खायेगा और सूर्य न हो और भूख लगे तो भी नहीं खायेगा तो वह काहे का संन्यासी है ? संन्यासी को तो ऐसे सब बंधन तोड़ देने चाहिए। तुकाराम ने कहा है 'नको गुन्तूं भोगी, नको पडूं त्यागी।' हमें भोग में भी नहीं फँसना चाहिए।

संन्यासी के लिए यह उचित नहीं है कि फलानी चीज छोड़ो और फलानी खाओ। उसे तो ज्ञानदेव की उस व्याख्या के मुताबिक खाना चाहिए, जिसमें ज्ञानदेव ने कहा है, "आंगा बळ यावें, क्षुधा जावें, की जिभेचे पुरवावे मनोरथ।" शरीर बलवान हो, भूख मिटे या जीभ की इच्छा पूरी हो, इन तीनों दृष्टियों को टालकर खाना चाहिए। चीनी छोड़कर शहद खाना याने गरीब का खाना छोड़कर अमीरी खाना आरंभ करना है। यह हो सकता है कि किसीकी मीठी चीजों पर ज्यादा आसक्ति हो तो साधना की दृष्टि से वह कुछ दिनों के लिए चीनी छोड़ सकता है। लेकिन चीनी छोड़कर शहद खाना शुरू नहीं करना चाहिए।

मैं १९१६ में बनारस से बापू के पास अहमदाबाद जाने के लिए निकला तो रास्ते में मथुरा में एक होटल में गया और उसके मालिक से पूछा कि 'आपके पास चावल हैं ?' तो उसने जवाब दिया, 'क्या आप बीमार हैं ?' वह बात मुझे ऐसी चुभी कि किसीने तीर मारा हो। उत्तर में अक्सर रोटी ज्यादा खाते हैं, चावल कम खाते हैं, इसलिए उस भाई ने मुझसे वैसा सवाल पूछा। फिर उस दिन मैंने चावल नहीं खाया, साग-पूड़ी ही खायी। मेरा पिंड (शरीर) चावल पर बना हुआ था, इसलिए मैंने और पचास चीजें खायीं, लेकिन चावल नहीं खाया तो मुझे लगता था कि मैंने खाना नहीं खाया। उस दिन मुझे भान हुआ कि यह तो गुलामी है। इसलिए तबसे मैंने चावल खाना छोड़ दिया। मुझे लगा कि मुझे चावल का व्यसन ही है, इसीलिए मैंने छोड़ा।

उपनिषदों में एक कहानी है। देश में अकाल पड़ा, इसलिए एक राजा यज्ञ कर रहा था। एक ऋषि, जो कि भूख से पीड़ित था, यज्ञ में कुछ खाना मिलेगा, यूँ सोचकर अपनी पत्नी को लेकर यज्ञस्थान पर जा रहा था। रास्ते में एक भाई एक चीज खा रहे थे। ऋषि ने कहा : 'मुझे भी दे दो।' उसने कहा : 'यह जूठा है।' ऋषि ने कहा : 'कोई हर्ज नहीं।' फिर ऋषि ने वह जूठी चीज खायी। फिर उस भाई ने पूछा कि 'क्या पानी भी पीओगे' तो ऋषि ने कहा कि 'नहीं, वह तो जूठा है।' इसपर उस भाई ने पूछा कि 'फिर जूठी चीज कैसे खायी ?' ऋषि ने जवाब दिया कि 'पानी के बिना मैं अभी जी सकता हूँ, लेकिन खाने के बिना नहीं जी सकता था। पानी मुझे और भी कहीं मिल सकता है।' इस कहानी का सार बड़े महत्त्व का है।

आश्रम में एक दफा अंडे की बात निकली तो किसीने कहा कि अंडा तो शाकाहार में आ जाता है। मैंने कहा कि ब्रह्मचारी के लिए अंडा खाना अनुचित है। उससे कामवासना बढ़ती है। तब बापू ने कहा था कि "तुम ठीक कहते हो। लेकिन बीमार आदमी अंडा खा सकता है। वह ब्रह्मचर्य के खिलाफ नहीं होगा। क्योंकि बीमार का एक ही मकसद होता है। शरीर को स्वस्थ बनाना—इसलिए वह अंडा खायेगा तो अंडे का परिणाम उसके शरीर को ताकत देने में ही होगा। उसपर अंडे का और कुछ बुरा परिणाम नहीं होगा। लेकिन दूसरा कोई अंडा खायेगा तो उसपर उसका बुरा परिणाम होगा।" ● ● ●

कपड़ा नहीं धोया गया था। मैंने उसकी सेवा की। गाँव में गंदगी देखी तो सफाई का काम किया। इस तरह से कुछ न कुछ सेवा मैंने दिनभर में की है। यह हर आदमी रात में अपनी डायरी में लिखे। इसका मतलब यह नहीं है कि घर की सेवा होती ही है। जिनका घर से संबंध नहीं है, उनकी कुछ-न-कुछ खिदमत की हो तो लिख रखे और यह लिखे कि भगवान ने आज मुझसे इतनी सेवा ली है। जिस दिन आपने सेवा नहीं की, उस दिन भगवान ने मेरी सेवा नहीं ली—ऐसा लिखें और यह लिखें कि आज मैं मर गया। जिस दिन सेवा की होगी, उसी दिन लिखें कि मैंने आज इतने भाई-बहनों की सेवा की। मुझे देने का मौका आया तो मैं जीया। आज मैंने तीन दफा खाया, इसलिए मैं जीया, यह खयाल गलत है। ● ● ●

अनुक्रम

१. जिन्हीं नाम घी आइयां गये मसक्कत घाल
मीरासाहिबां ८ जून '५९ पृष्ठ ७७१
२. इन्सानियत को बचानेवाली चार पगडंडियाँ
साम्बा ४ जून '५९ ,, ७७२
३. सेवा जीवन है और अकर्मण्यता मृत्यु
रणवीर सिंगपुरा ७जून '५९ ,, ७७३
४. क्या संन्यासी सम्प्रदाय में रह सकता है ?
,, ७७४

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता : गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी।